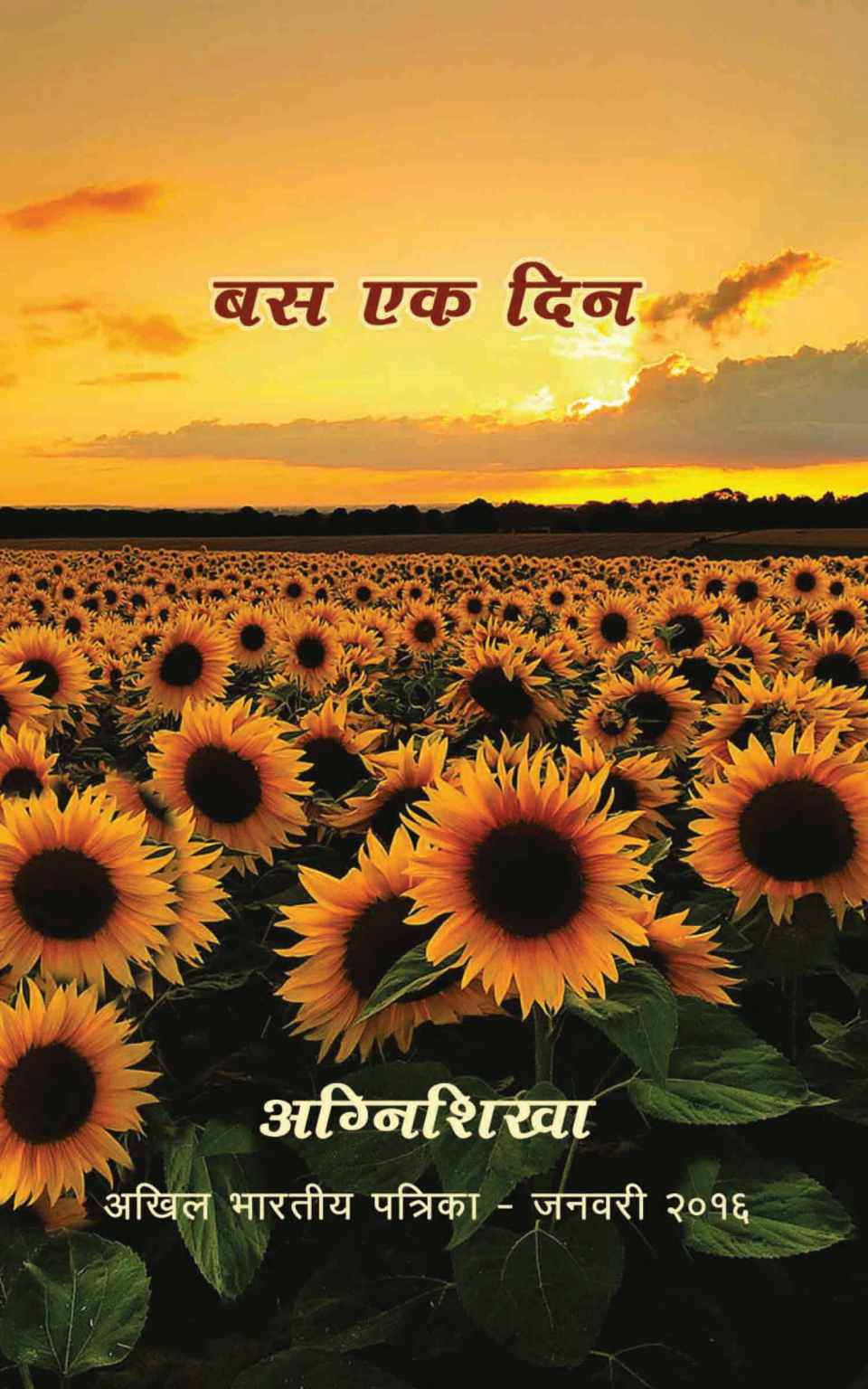

बस एक दिन

अग्निशिखा

अखिल भारतीय पत्रिका - जनवरी २०१६

सम्पादकीय : श्रीमां ने २९ फरवरी १९५६ में यह घोषणा की कि अतिमानसिक चेतना पृथ्वी पर अभिव्यक्त हो चुकी है। उस समय से पृथ्वी पर एक नवीन चेतना कार्यरत है जिसके द्वारा विकास-क्रम का एक नया चक्र प्रारम्भ हो चुका है, जो अन्ततः मनुष्य को मन के पार अतिमानसिक सत्ता की ओर ले जायेगा। पृथ्वी पर प्रभु की इस विजय को पुरातन काल की विभिन्न आध्यात्मिक परम्पराओं में पूर्वाभास के रूप में देखा और कहा गया है। श्रीअरविन्द एवं श्रीमां ने न केवल हमें इस 'भविष्य' का दर्शन कराया है बल्कि इसे पृथ्वी एवं मानवजाति के लिए सुरक्षित भी कर लिया है। उन्होंने इस बहुप्रतीक्षित जीवन एवं सृष्टि को दिव्य परिपूर्णता की ओर ले जाने वाला अनुसरणीय पथ भी दिखलाया है। इस महीने के लिए हमने दिव्य मन्त्रबद्ध काव्य 'सावित्री' की कुछ ऐसी ही पंक्तियां चुनी हैं जो मानव-रात्रि में उदय होते इस 'भविष्य' का संकेत देती हैं।

इस महीने का विषय है, "एक दिन" जो उस अभीप्सा को प्रकट करता है जिस दिन हम अतिमानसिक चेतना की पूर्ण अभिव्यक्ति का साक्ष्य करेंगे जिसका प्रारम्भ हो चुका है।

प्रत्येक महीने में, अतिमानसिक चेतना के सन्दर्भ में, पुष्प के चित्र के साथ उसका नाम भी दिया गया है। श्रीमां द्वारा इस प्रकार आध्यात्मिक नाम दिये गये लगभग ९०० पुष्पों में से ६० अतिमानस से सम्बद्ध हैं। मुखपृष्ठ पर सूर्य के नीचे खिलते सूर्यमुखी के उद्यान का चित्र है।

मुखपृष्ठ के पुष्प का श्रीमां द्वारा दिया गया आध्यात्मिक अर्थ :

अतिमानसिक प्रकाशोन्मुख चेतना

वह सत्य की पिपासु है और केवल सत्य में ही अपनी सन्तुष्टि पाती है।

सामान्य नाम : सूर्यमुखी

श्रीअरविन्द सोसायटी की मासिक पत्रिका

Website: www.aurosociety.org

सम्पादिका : वन्दना

प्रकाशक : प्रदीप नारंग, श्रीअरविन्द सोसायटी, पॉण्डिचेरी—६०५००२

मुद्रक : स्वाधीन चैटर्जी, श्रीअरविन्द आश्रम प्रेस, पॉण्डिचेरी

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

बस एक दिन

थोड़ा-सा और

बस एक दिन और सब अर्धकृत कार्य हुआ समाप्त,
बस एक दिन और अखिल अजन्मे का हो गया आरम्भ;
बस थोड़ा-सा रास्ता, और महान् लक्ष्य उपस्थित,
बस एक स्पर्श, ला देता है वह अशेष दिव्यता।

पहाड़ियों पर पहाड़ियां चढ़े और अब
देखो, अन्तिम दारुण भ्रू-शिखर
एक विशाल चट्टान जिस पर
नहीं पड़े किसी के चरण :
बस एक कदम, और सब है नील गगन और अनन्त भगवान्।

CWSA खण्ड २, पृ. ५४२ —श्रीअरविन्द

अतिमानसिक अभिव्यक्ति

इसका स्वागत होगा।

वानस्पतिक नाम : Scadoxus multiflorus

January 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

शिव के एक ताण्डव नृत्य ने भूतकाल को छिन्न-भिन्न कर डाला;....
मैंने सर्वशक्तिशाली परमेश के प्रज्वलित अग्रगामियों को
स्वर्ग की उस सीमा पर देखा जो पार्थिव जीवन की ओर मुड़ती है
वे जन्म के अम्बर-सोपानों पर से समूहों में नीचे उतर रहे थे;
वे एक दिव्यता के अग्रदूत संख्या में अनेक थे,
प्रभात के शुभ्र तारे के पथों से बाहर निकल रहे थे,
मर्त्य-जीवन के इस लघु कक्ष में प्रवेश करने।
एक युगान्तर के सान्ध्य प्रकाश को मैंने उन्हें पार करते देखा,
एक अद्‌भुत उषा के उन सूर्य-सम चमकते नेत्रोंवाले बालकों को,
शान्त-विशाल भाल के उन महान् स्रष्टाओं को,
इस जग-संरचना के घोर-स्थूल सीमा-भञ्जकों को
और नियति के साथ उसके संकल्पों से जूझने वाले मल्लयोद्धाओं को
देवों की खदानों में कार्य करने वाले श्रमिकों को,
उस अनिर्वचनीय प्रभु के सन्देशवाहकों को,
अमरता के दिव्य शिल्पकारों को देखा।...

उनका पदक्षेप एक दिन इस शोकार्त धरा को रूपान्तरित कर देगा
और विश्व-प्रकृति के आनन की ज्योति का औचित्य सिद्ध कर देगा।

अतिमानसिक विहग

यह ठीक वहीं रहता है जहां अवतरित हुआ है।

वानस्पतिक नाम : Strelitzia reginae, (Bird of paradise, Crane flower)

February 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29					

मौन भाव से सकल विश्व-प्रकृति केवल उसी को टेरती है
कि उसकी चरणधूलि पा जीवन-पीड़ा की कसक थम जाये
और मानव की धूमिल आत्मा पर लगे ताले सब टूट जायें
और उसकी ज्वाला वस्तुओं के बन्द अन्तरों में प्रज्वलित हो उठे।
तब एक दिन आयेगा जब यह धरा उसकी मधुरिमा का धाम बनेगी,
सकल विरोधी द्वन्द्व-भाव उसके सामञ्जस्य के रचनाकार होंगे;
हमारा ज्ञान उसी की दिशा बढ़ता है,
हमारे भावावेश उसी को खोजते हैं;
उसकी अद्‌भुत आत्मरति में एक दिन हम बसेंगे,
तब उसका आलिंगन हमारी पीड़ा को आह्लाद में बदल देगा।
हमारी व्यक्तिसत्ता उसके माध्यम से समष्टि से एकात्म हो जायेगी।
हमारा जीवन उसके अन्तर में प्रतिष्ठित है अतः रूपान्तरित हो
एक दिन अवश्य यह अपनी पूर्णता का प्रत्युत्तर पा जायेगा,
ऊर्ध्व में होगा अनन्त मौन चिदानन्द,
और धरातल पर होगा भागवत आलिंगन का चमत्कार।

अतिमानस ज्योति के लिए भौतिक में अभीप्सा

गुच्छेदार, अध्यवसायी, आग्रही, व्यवस्थित और क्रमबद्ध।

वानस्पतिक नाम : Ixora javanica [Ixora singaporensis]

March 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

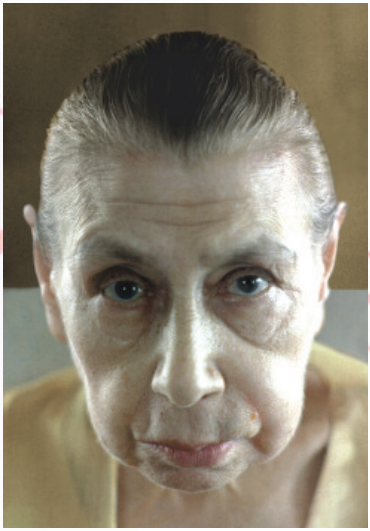

"ओ दुःखों को भोगती देवि! दिव्य वेदना की मां भगवति,
मेरी अपनी आत्मा का एकांश हो,
इस जगत् के असहनीय कष्टों को भोगने तू सामने आ जाती है।
क्योंकि तू है, मानव अपने सर्वनाश के आगे नहीं झुकता,
बल्कि सुख की मांग करता है, और भाग्य से लड़ता है;
क्योंकि तू है, अभागा अभी भी आशा रख सकता है।
किन्तु तेरी शक्ति शान्ति देती है, मुक्ति नहीं।
एक दिन, मैं पुनः शक्ति-भरा पात्र ले लौटूंगी,
और तुझे उस चिरन्तन के पात्र से पान कराऊंगी;
उसके शौर्य-बल की धाराएं तेरे अंगों में विजयश्री ले आयेंगी
और प्रज्ञा देवी की शान्ति तेरे आवेशी हृदय पर नियन्त्रण कर लेगी।
तेरा प्रेम तब मानवजाति को बांधता प्रेम-सूत्र बन जायेगा,
भौतिक प्रकृति के लिए अनुकम्पा ही उज्ज्वल कुञ्जी है :
जिससे इस पृथ्वी से यातना-दुःख का निष्कासन हो पायेगा;
पाशविक क्रोध से तब यह संसार मुक्त हो जायेगा,
आसुरी निर्दयता और उसकी पीड़ा से छूट जायेगा।
तब यहां आनन्द और शान्ति का साम्राज्य और विशाल हो जायेगा।"

अतिमानसिक समृद्धियां

ऐसी समृद्धियां जो अतिमानसिक सत्ता के अधिकार में होती हैं, लेकिन फिर भी मनुष्य के लिए अपरिचित हैं।

वानस्पतिक नाम : Selenicereus

April 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

'हे शक्ति की देवि, कर्मों और शौर्य की आदि जननि,...

एक दिन मैं ज्ञान का प्रकाश लेकर अवश्य लौटूंगी;
तब मैं तुझे प्रभु का आत्म-दर्पण भेंट दूंगी;
और तू अपनी आत्मा के उज्ज्वल कुण्ड में आभासित देखेगी
स्वयं का आत्मरूप और इस संसार का सत्यदर्शन, जैसे प्रभु इन्हें देखते हैं।
तब मेरी प्रज्ञा भी तेरी शक्ति-सम विशाल हो जायेगी।
मानव के अन्तरों में घृणा और अधिक बस नहीं पायेगी,
और भय और दुर्बलता मानवों के जीवनों से पलायन कर जायेंगे,
अन्तर में अहम् की पुकार मूक हो जायेगी,
इस संसार को भोज्य-सम दावा करती इसकी सिंह-गर्जना शान्त हो जायेगी,
सब कुछ पराक्रम और आनन्द औ' प्रसन्न ऊर्जा का संगम हो जायेगा।"

सम्पूर्ण अतिमानसिक प्रकाश में चेतना की तीव्रता

वह दीप्तिमयी है और जगत् को प्रकाशित करने के लिए विकीरित होती है।

वानस्पतिक नाम : Helianthus (सूर्यमुखी)

May 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

"हे प्रकाश की देवि, हर्ष और शान्ति की जननि,...
क्योंकि तू उपस्थित है, यह अन्तरात्मा प्रभु की ओर खिंचती है;
क्योंकि तेरा अस्तित्व है, घृणा के विद्यमान होने पर भी प्रेम विकसित होता है
और इस अन्धी रात्रि के गर्त में अवधित ज्ञान विचरण करता है।...

चाहे तू यहां पर अन्तर्बोध की किरणों की वर्षा क्यों न कर दे,
मानव का मन इसे धरती की अपनी आत्म-चमक ही समझेगा,
फिर उसकी आत्मा आध्यात्मिक अहंकार में डूब जायेगी,
या उसकी आत्मा अपनी साधुता के चमकीले कक्ष में कैद सपना देखेगी
जहां पर केवल परमात्मा की एक दीप्तिमयी छाया प्रवेश पायेगी।
मां, तुझे मनुज की चिरन्तन की भूख को पोषित करना है
और उसके लालायित हृदय को दिव्यता की अग्नि से पूरित करना है
और उसकी देह और जीवन में प्रभु को उतार लाना है।
एक दिन मैं प्रभु का हाथ थाम लौट कर आऊंगी,
और तू उस परमेश्वर का दर्शन अवश्य पायेगी।
तभी यह पुनीत विवाह-बन्धन सिद्ध हो पायेगा,
तभी यहां दिव्य-परिवार जन्म ले पायेगा।
फिर सकल लोकों में ज्योति और शान्ति का साम्राज्य हो जायेगा।"

अतिमानसिक सूर्य

हम अभीप्सा करते हैं कि इसकी किरणें हमें प्रकाशित और रूपान्तरित करें।

वानस्पतिक नाम : Anthocephalus cadamba (कदम्ब)

June 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

किन्तु ईश्वर की परात्परता में और भी अधिक गोपित है
जो अपना अवगुण्ठित मुख एक दिन अवश्य प्रकटायेगा।...

उसके अथक आरोहण की पहुंच केवल मन तक ही नहीं है,
इन लोकों की धुरी पर एक दिव्याग्नि प्रज्वलित है,
वहां शाश्वत की ज्योति का एक भवन है,
वहां एक चिर-सत्य है, एक परंतप शक्ति है।
परमात्मा की शक्ति वहां अपना मुखौटा उतार देगी;
इस संसार के पथ का रूपायण करती इसकी महिमा की अनुभूति होगी :
यह तब अपनी आवरणहीन आत्मकिरणों में दिखायी देगी,
इस घोर अचित् की रात्रि से एक तारे-सम उदित होती
परा-प्रकृति के शिखर पर एक सूर्य-सम आरोहण करती।...

विरले ही होंगे जो इस चमत्कारी दिव्य 'आरम्भ' की झलक पायेंगे
और कुछ तुझमें उस गुह्य दिव्य शक्ति का अनुभव पायेंगे,
और वे एक अनामी पगध्वनि को भेंटने निज जीवन-पथ पर मुड़ जायेंगे,
महानतर दिवस में प्रवेश करते वे साहसी वीर होंगे।
मन की सीमित श्वासों से वे निकल चढ़ जायेंगे,
संसार की विराट् योजना का सन्धान करके
वे परम ऋत्, नित्य शिव, परम विराट् में पदार्पण कर लेंगे।

भगवान् के प्रति अतिमानसिक अनुरक्ति

बहुविध और मुस्कुराती हुई, अपने-आपको अनन्त रूप से दोहराती है।

वानस्पतिक नाम : 'Father's Day' Rosa (गुलाब)

July 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

जब तक वह देवर्षि निज तालमय उच्चारण से
मानव के श्रम की और धरती-हित देवों के प्रयास की गाथा सुनाते रहे,
और पीड़ा के रहस्य के पीछे छिपे उसके
हर्ष की और गोपित स्पन्दन के सुख की कथा बताते रहे।
उन्होंने प्रेम के पद्म-हृदय का गीत उन्हें सुनाया
जो सत्य की सहस्र ज्योति-कलिकाओं के साथ खिला,
अभिव्यक्त वस्तुओं के पीछे कम्पित-स्पन्दित यह सोया है।
यह कली प्रत्येक स्पर्श से चौंकती है, जागने का प्रयास करती है
और एक दिन यह अवश्य एक आह्लाद की वाणी सुनेगी
और दिव्य प्रियतम के कानन में पुष्प बन खिल उठेगी
जब वह अपने फिर से प्राप्त प्रभु द्वारा अधिकृत कर ली जायेगी।
भाव-समाधि रसधारा की एक शक्तिशाली कम्पित कुण्डली
इस गायन से जाग्रत् हो ब्रह्माण्ड के गहन हृदय को वेधती चली गयी।
अपनी जड़ता की मूर्च्छा, अपने मन के सपनों से बाहर आ,
उसने सचेत हो, प्रभु के आवरणहीन मुख का दर्शन पाया।

अतिमानसिक चेतना

भव्य रूप से जाग्रत् तथा शक्तिशाली, अपने बारे में निश्चित, अपनी क्रियाओं में अचूक होती है।

वानस्पतिक नाम : Hibiscus rosa-sinensis

August 2016

Sun	*Mon*	*Tue*	*Wed*	*Thu*	*Fri*	*Sat*
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

जिस परमैकम् ने इस संसार को आकार दिया वही इसका स्वामी है :
हमारे दोष उसके मार्ग पर चलते हुए उसी के कदम हैं;
हमारे जीवनों के विषम उतार-चढ़ावों द्वारा वही कार्य करता है,
संग्राम और कठोर श्रम के बोझिल श्वास में वही कार्य करता है,
हमारे पापों, दुःखों और अश्रुओं के माध्यम से भी वह कार्य करता है,
प्रभु का ज्ञान हमारी निश्चेतना को अधिकृत कर मिटा देता है;
हमारा रूप-रंग चाहे कैसा भी क्यों न हो,
हमारे वर्तमान दुर्भाग्य और दोष कितने भी क्यों न हों,
जब हमें कुछ भी सहारा न दीखे और नाव मंझधार में हो,
इस सबके मध्य से हमें एक शक्तिशाली पथ-प्रदर्शक लिये चलता है।
जब हम इस महान् खण्ड-खण्ड में बंटे संसार की सेवा से निवृत्त हो जाते हैं
तब प्रभु के आनन्द और एकत्व पर हमारा सहज अधिकार होता है।
परम अज्ञेय प्रभु के पंचांग में एक तिथि निश्चित है,
दिव्य-जन्म की एक पावन-जयन्ती निश्चित है :
तभी हमारा आत्म-पुरुष अपनी चतुरंगी चाल का औचित्य सिद्ध कर पायेगा,
अभी तक जो नहीं है अथवा सुदूर है तब सब समीप आ जायेगा।
अन्ततः, ये शान्त और सुदूरवासिनी दिव्य सामर्थ्यताएं कार्य-सञ्चालन करेंगी।

अतिमानसिक प्रेम की सुन्दरता (ओरोवील का पुष्प)

अपनी उच्चता में रहने के लिए हमें प्रेरित करती है।

वानस्पतिक नाम : Hibiscus rosa-sinensis

September 2016

Sun	*Mon*	*Tue*	*Wed*	*Thu*	*Fri*	*Sat*
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

एक दिन उस मुखौटे के मध्य वह परम आनन प्रज्वलित हो प्रकटेगा।
यह हमारा अज्ञान परम प्रज्ञा की कोषावस्था ही तो है,
हमारी त्रुटियां जीवनमार्ग पर बढ़ते हुए नव ज्ञान का वरण करती हैं,
इसका अन्धकार भी प्रकाश की ही एक कलुषित ग्रन्थि है;
यहां विचार भी निश्चेतना के हाथ में हाथ डाले नृत्य करता
अपने धूमिल पथ पर चलता है
जो सत्य के सूर्य की ओर घूम-घूम बढ़ता है।...

उन अनन्तताओं से एक अग्नि निकल यहां उतरेगी,
एक महत्तर प्रज्ञाज्योति इस जगत् को सम्मानित करेगी
किसी दूरस्थ परात्पर सर्वज्ञ को पार करती
निश्चल आत्म-समाहित एकेश्वर से निकले दीप्तिमान सागरों पर बहती
यहां गहन-गुह्य हृदय में स्थित चैत्य और पदार्थों को प्रकाशमय करने आयेगी।
मानव सत्ता-हित यह एक कालातीत विद्या ले आयेगी,
जीवन को उसका लक्ष्य देगी, अविद्या का अन्त कर देगी।

अतिमानसिकृत मनोवैज्ञानिक पूर्णता

दिव्य बनने की अभीप्सा करते हुए मनोवैज्ञानिक पूर्णता

वानस्पतिक नाम : Michelia champaca, (चम्पा)

October 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

"ओह, निश्चय ही उसे हमारी पुकार सुन एक दिन आना होगा,
एक दिन हमारे जीवनों का वह नव-निर्माण करेगा
और शान्ति का चमत्कारी महामन्त्र उच्चारण करेगा
और पदार्थों की योजना में परिपूर्णता ले आयेगा।
एक दिन वह जीवन और धरती पर अवश्य उतरेगा,
शाश्वत द्वारों के पीछे की छिपी गोपनीयता को त्याग
सहायता-हित इस सतत पुकारती पृथ्वी पर वह उतर आयेगा,
और उस आत्म-मुक्तिदाता सत्य को साथ लायेगा,
एवं उस आनन्द को जो आत्मा का विशुद्ध-भाव है,
भागवत प्रेम के प्रशस्त वरद हस्त की शक्ति ले आयेगा।
एक दिन वह निज सौन्दर्य पर से भीषण अवगुण्ठन उठा लेगा,
और जगत् के धड़कते हृदय पर आनन्द-सुख को आरोपित कर,
ज्योति तथा सुखानन्द की निज गुह्य देह प्रकट कर देगा।"

धरती पर अतिमानसिक अमरता

इसे चरितार्थ करना बाकी है।

वानस्पतिक नाम : Helichrysum bracteatum

November 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

एक दिन मैं अपनी इस महान् प्रिय जगती को
देवताओं के इन घोर आवरणों से निकलते देखूंगी,
इस भय के घूंघट और पाप की पोशाक उतारते अवलोकूंगी।
हम दोनों तब शान्ति से पूरित, धरती-माता के समीप खिंच आयेंगे,
हम अपनी चैत्य-सरल आत्माओं को उसकी गोद में धर देंगे;
तब हम उस परमानन्द को, जिसके पीछे हम दौड़ते हैं, आलिंगन में बांध लेंगे,
हम आदिकाल से खोजते उस देवता से पुलकित हो जायेंगे,
हम सुरलोक के उस अप्रत्याशित स्वर को यहां पा जायेंगे।
यह आशा यहां पर केवल विशुद्ध दिव्यात्माओं-हित ही नहीं है;
वरन् हिंसक और काली तामसिक दिव्यताएं
जो उसी मूल उद्‌गम से रौद्ररूपा नीचे कूद कर आयी हैं
उस सद्वस्तु को पाने के लिए, जिसे शुद्धात्माओं ने खो दिया था :
वे भी इस पृथ्वी पर सुरक्षित हैं; एक भगवती माता की दृष्टि उन पर है
और उसकी बांहें अपनी विद्रोही सन्तानों को प्रेम से बांध लेने को फैली हुई हैं।

अतिमानसिक क्रिया

ऐसी क्रिया जो ऐकान्तिक नहीं बल्कि सम्पूर्ण होती है।

वानस्पतिक नाम : Barringtonia asiatica

December 2016

Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

"हे मृत्यु, अभी तू कुछ काल और जीवित रह, मेरा यन्त्र बन कार्य कर।
एक दिन मानव तेरे अगाध, नीरव हृदय को अवश्य जान जायेगा
और शान्ति की समाधि में मग्न कालरात्रि का ज्ञान पायेगा
और शाश्वत विधान के अनुपालन की गम्भीरता को
और तेरी दृष्टि में छिपी स्थिर शान्त करुणा को जानेगा।
किन्तु अभी, हे अकाल महाबली, तू एक ओर हट जा
और मेरी अवतारी महाशक्ति का मार्ग छोड़, दूर हो जा।
अपने काले मुखौटे से मेरे तेजस्वी देवता को मुक्त कर दे :
संसार जिसे सत्यवान् कह पुकारता है उस आत्मा को छोड़ दे
जिससे वह तेरी पीड़ा और अज्ञान के चंगुल से स्वतन्त्र हो
जीवन और नियति के ऊपर अधिपति बन खड़ा रहे,
प्रभु के भवन में वह मानव का प्रतिनिधि है,
प्रज्ञा का सहचर और दिव्य ज्योति का पति है,
शाश्वत वधू का शाश्वत वर है।"

श्रीमां व श्रीअरविन्द

दर्शन-दिवस

उन दिनों जब श्रीअरविन्द दर्शन दिया करते थे, दर्शन देने से पहले, सर्वदा ही कुछ शक्तियों की या उस विशिष्ट अनुभूति की एकाग्रता होती थी जिसे वे लोगों को देना चाहते थे। और इसलिए प्रत्येक दर्शन एक पग आगे बढ़ना होता था; प्रत्येक बार कोई चीज जोड़ी जाती थी। परन्तु यह उस समय होता था जब कि दर्शनार्थियों की संख्या बहुत सीमित होती थी। यह सब दूसरे ढंग से व्यवस्थित होता था, और यह आवश्यक तैयारी का एक अंग था।

परन्तु यह विशेष एकाग्रता, अब, अन्य समयों पर होती है, केवल दर्शन-दिनों पर नहीं। और यह दूसरे अवसरों पर, अन्य परिस्थितियों में पहले से कहीं अधिक होती है। यह क्रिया बहुत अधिक तेज हो गयी है, गति बढ़ गयी है; अवस्थाएं एक के बाद एक बहुत तीव्रता से आती हैं। और सम्भवतः उनका अनुसरण करना अधिक कठिन हो गया है; बहरहाल, यदि कोई अनुसरण करने की परवाह नहीं करता तो वह पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से पीछे छूट जाता है; उसे लगता है कि उसे देर हो गयी है अथवा वह छोड़ दिया गया है। सारी चीजें शीघ्रता के साथ बदलती हैं।

परन्तु, मां, आप प्रत्येक दर्शन-दिवस पर जो सन्देश दिया करती हैं उसका क्या अर्थ होता है? उदाहरणार्थ, आज आपने उस फूल का चित्र दिया है जिसका आध्यात्मिक अर्थ है अतिमानसिक अभिव्यक्ति।

हां, जैसा कि मैंने अभी कहा है, यह सन्देश हजारों प्रतियों के द्वारा सारे संसार में फैल जाता है। यह उस वस्तु का बाह्यीकरण है, यह प्रभाव को फैलाने का, सन्देश को फैलाने का, दूर-दूर तक पहुंचाने का एक तरीका है। दर्शन-सन्देश में कही गयी प्रत्येक चीज **पहले से** सुचिन्तित, प्रमाणित और परीक्षित होती है। और दर्शन-दिवस को वह दी जाती है। पहले परीक्षण किया जाता है, फिर उसे सार्वजनिक रूप से घोषित किया जाता है। पहली क्रिया होती है व्यक्तिगत विकास की; दर्शनोत्सवों पर वह चीज सर्वत्र फैल जाती है।

श्रीअरविन्द ने सर्वदा ही दो गतियों की चर्चा की है : व्यक्ति का निर्माण ताकि वह व्यक्तिगत रूप से लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो, और जगत् की तैयारी...।

व्यक्ति की प्रगति, ऐसा कह सकते हैं कि, समष्टि की अवस्था के द्वारा न तो एकदम रोक ली जाती है, न ही उससे सहायता पाती है, पर वह (स्थिति) दोनों के बीच एक प्रकार का सन्तुलन उत्पन्न करती है।

—'श्रीमातृवाणी', खण्ड ८, पृ. ३१७-१८

... ऐसे अवसरों पर (दर्शन-दिवस), श्रीअरविन्द के आशीर्वाद का आनन्द पाने के बाद, ज्यादा अच्छा यह है कि एकाग्र रहा जाये और औरों के साथ घुल-मिल कर बातें करते हुए अपना हर्ष फेंक देने की जगह उसे अपने अन्दर ताले-चाबी में बन्द करके रखा जाये। हम जिन अनुभूतियों के बारे में बातें करते हैं वे भाप बन कर उड़ जाती हैं और हमें उनसे जो लाभ हो सकता था हम उससे वञ्चित रह जाते हैं।

—'श्रीमातृवाणी', खण्ड १६, पृ. ९८

मधुर मां, मैं अपने-आपको २४ अप्रैल के दर्शन के लिए कैसे तैयार करूं?

एकाग्रता के साथ अपने अन्दर यह जानने के लिए देखो कि तुम्हारे अन्दर कौन-सी चीज सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, ऐसी चीज जिसके बारे में तुम अनुभव करते हो कि उसके बिना तुम्हारा काम नहीं चल सकता।

यह एक मजेदार खोज है।

मधुर मां, हमें दर्शन-दिवस, ५ दिसम्बर, ९ दिसम्बर और अपना जन्मदिन कैसे मनाना चाहिये?

(दर्शन-दिवस) सामान्य ज्ञान की अपेक्षा अधिक सत्य ज्ञान की खोज में।

५ और ९ दिसम्बर यह समझने में कि मृत्यु क्या है।

जन्मदिन जीवन के प्रयोजन का पता लगाने में।

आशीर्वाद।

—'श्रीमातृवाणी', खण्ड १६, पृ. ३७७-७८, ४६५-६६

दर्शन के लिए उचित मनोभाव

प्रश्न : किसी ने मुझसे कहा कि १५ अगस्त के दर्शन के लिए बस दस दिन रह गये हैं। मैंने जवाब दिया कि प्रत्येक दिवस को १५ अगस्त की तरह मानना चाहिये। उत्तरः यही उचित मनोभाव है। प्रत्येक दिवस को ऐसा दिवस मानना चाहिये जब अवतरण हो सकता है या उच्चतर चेतना के साथ सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। तब १५ अगस्त अधिक सफल होगा।

रही बात १५ अगस्त की, तो उस पर बहुत जोर मत दो, जो अन्ततः वैयक्तिक उपलक्ष्य की बजाय अधिक सामान्य दिवस है—किसी भी व्यक्ति के लिए साल का कोई भी दिन १५ अगस्त हो सकता है—यानी आन्तरिक सत्ता में किसी का या किसी वस्तु का जन्मदिन हो सकता है। इस मनोभाव के साथ व्यक्ति को साधना करनी चाहिये।

ऐसा बहुधा होता है कि जब दर्शन-दिवस समीप आता है तो विरोधी शक्तियां व्यक्तिगत या व्यापक रूप से प्रहार करने के लिए इकट्ठी हो जाती हैं ताकि व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति जो ग्रहण कर सकता है और व्यापक रूप में जो कुछ नीचे उतारा जा सकता है, दोनों में ही बाधक बन कर खड़ी हो जायें। और बहुत बार दर्शन-दिवस के बाद के दिन जबरदस्त प्रहार होता है क्योंकि विरोधी शक्तियां जो सम्पन्न हो चुका है उसे मिटाना या आगे बढ़ने से रोकना चाहती हैं। लेकिन जहां तक व्यक्ति का सवाल है, उसे इस प्रहार से गुजरने की कोई आवश्यकता नहीं; क्योंकि अगर वह अपनी प्रकृति के बारे में सचेतन हो तो वह प्रतिक्रिया करके प्रहार को बाहर फेंक सकता है। और अगर प्रहार फिर भी दबाव डालता रहे तो व्यक्ति अपने संकल्प तथा अटूट श्रद्धा से लैस होकर अस्थायी बाधा से निकल कर महानतर उद्घाटन तथा एक नयी प्रगति की ओर खुल सकता है।...

CWSA खण्ड ३५, पृ. ५२३, ५२४-२५

दर्शन के लिए सर्वोत्तम तरीका है—स्वयं को बहुत एकत्रित और शान्त रखो तथा जो कुछ श्रीमां प्रदान करें उसे ग्रहण करने के लिए खुले रहो।

CWSA खण्ड ३२, पृ. ५६९ —श्रीअरविन्द

नववर्ष की प्रार्थना

हर क्षण सभी अनपेक्षित, अप्रत्याशित और अज्ञात हमारे सामने होता है, हर क्षण विश्व अपने प्रत्येक भाग में और अपनी समग्रता में पुनर्निर्मित होता रहता है। और अगर हमारे अन्दर सचमुच जीती-जागती श्रद्धा होती, अगर हमें तेरी सर्वशक्तिमान् सामर्थ्य और एकमात्र सद्वस्तु के बारे में निरपेक्ष निश्चिति होती तो तेरी अभिव्यक्ति हर क्षण इतनी स्पष्ट होती कि समस्त विश्व उसके द्वारा रूपान्तरित हो जाता। लेकिन जो कुछ हमें चारों ओर से घेरे हुए है और हमसे पहले हो चुका है उसके हम ऐसे दास हैं, जो कुछ अभिव्यक्त हुआ है उसकी सारी राशि के द्वारा हम इतने अधिक प्रभावित होते हैं और हमारी श्रद्धा इतनी दुर्बल होती है कि हम अब भी रूपान्तर के महान् चमत्कार के मध्यस्थ होने में असमर्थ रहते हैं...। लेकिन हे प्रभो, मैं जानती हूं कि एक दिन ऐसा होगा, मैं जानती हूं कि एक दिन आयेगा जब तू उन सबको रूपान्तरित कर देगा जो हमारे नजदीक आते हैं; तू उन्हें ऐसे आमूल रूप से रूपान्तरित कर देगा कि वे पूरी तरह से भूतकाल के बन्धनों से मुक्त हो जायेंगे, वे तेरे अन्दर एकदम नये जीवन के साथ जीना शुरू करेंगे, एक ऐसा जीवन जो पूरी तरह तुझसे बना होगा और तू ही उसका परम प्रभु होगा। और इस तरह सभी चिन्ताएं निरभ्रता में बदल जायेंगी, सभी परिताप शान्ति में, सभी सन्देह निश्चिति में, समस्त कुरूपता सामञ्जस्य में, समस्त अहंकार आत्मदान में, सारा अंधेरा प्रकाश में और सभी दुःख-दर्द अपरिवर्तनशील सुख में बदल जायेंगे।

लेकिन क्या तू अब भी ये सब चमत्कार चरितार्थ नहीं कर रहा? मैं उसे हर जगह अपने चारों ओर खिलते हुए देख रही हूं!

हे प्रेम और सौन्दर्य के दिव्य विधान, परम मुक्तिदाता, तेरी शक्ति के आगे कोई बाधा नहीं है। केवल हमारी अन्धता ही हमें तेरी सतत विजय के सुखद दृश्य से वञ्चित रखती है।

मेरा हृदय सुख के भजन गाता है और मेरा विचार आनन्द से प्रदीप्त है।

तेरा परात्पर और अद्भुत प्रेम जगत् का परम स्वामी है।

—'श्रीमातृवाणी', खण्ड १, पृ. ३६-३७

२०१६ के विशेष दिवस

१ जनवरी	:	Bonne Année शुभ नववर्ष
२१ फरवरी	:	श्रीमां की १३८वीं जन्म-जयन्ती
२८ फरवरी	:	ओरोवील का ४६वां जन्म-दिवस
२९ फरवरी	:	अतिमानसिक अवतरण (हर चार वर्ष में) की १५हवीं जयन्ती
२९ मार्च	:	श्रीमां के पहली बार पॉण्डिचेरी-आगमन तथा श्रीअरविन्द से भेंट की १०२वीं जयन्ती
४ अप्रैल	:	श्रीअरविन्द के पॉण्डिचेरी-आगमन की १०६ठवीं जयन्ती
२४ अप्रैल	:	श्रीमां के अन्तिम आगमन की ९६वीं जयन्ती
१५ अगस्त	:	श्रीअरविन्द का १४४वां जन्मदिवस
१९ सितम्बर	:	श्रीअरविन्द सोसायटी की ५६वीं जयन्ती
१७ नवम्बर	:	श्रीमां की महासमाधि
२० नवम्बर	:	श्रीमां का शरीर समाधिस्थ किया गया
२४ नवम्बर	:	सिद्धि-दिवस। श्रीकृष्ण का भौतिक में अवतरण
२ दिसम्बर	:	शारीरिक शिक्षण का वार्षिक प्रदर्शन
५ दिसम्बर	:	श्रीअरविन्द की महासमाधि
९ दिसम्बर	:	श्रीअरविन्द का शरीर समाधिस्थ किया गया

२९ फरवरी १९५६, अतिमानसिक अभिव्यक्ति

चार दर्शन-दिवस :

२१ फरवरी, श्रीमां का जन्म-दिवस (१८७८)
२४ अप्रैल, श्रीमां का पॉण्डिचेरी में अन्तिम आगमन (१९२०)
१५ अगस्त, श्रीअरविन्द का जन्मदिवस (१८७२)
२४ नवम्बर, सिद्धि-दिवस (विजय-दिवस), अधिमानस के देवत्व, श्रीकृष्ण का भौतिक में अवतरण (१९२६)

नव-वर्ष

एक और वर्ष बीत गया और अपने पीछे पाठों का बोझा छोड़ता गया जिनमें कुछ कठोर हैं और कुछ पीड़ाजनक भी।

अब एक नया वर्ष शुरू हो रहा है और अपने साथ प्रगति और उपलब्धियों की सम्भावनाएं ला रहा है। लेकिन इन सम्भावनाओं का पूरा लाभ उठाने के लिए हमें पिछले पाठों को समझना चाहिये।

यह जानना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि सभी दुर्घटनाएं निश्चेतना का परिणाम होती हैं। फिर भी, बाहरी रूप से उनके मुख्य कारणों में से एक है, अनुशासन का अभाव, अनुशासन के लिए एक प्रकार का तिरस्कार।

यह हमारे ऊपर छोड़ा गया है कि हम अनुशासनयुक्त सतत प्रयास के द्वारा यह प्रमाणित करें कि हम अधिक सचेतन और अधिक सत्य जीवन की अपनी अभीप्सा में सच्चे और निष्कपट हैं।

१६.१२.१९६६ —श्रीमां

शुल्क-दरें : १ वर्ष—१८० रु.
३ वर्ष—५२० रु.
५ वर्ष—८६० रु.

पत्रिका हर महीने की ४ तारीख को प्रेषित की जाती है।

उनकी कृपा का स्पर्श कठिनाई को सुयोग में, विफलता को सफलता में और दुर्बलता को अविचल बल में परिणत कर देता है। भगवती माँ की कृपा परमेश्वर की अनुमति है, आज हो या कल, उसका फल निश्चित है, पूर्वनिर्दिष्ट अवश्यंभावी और अनिवार्य है ।

– श्रीअरविन्द

अमरनाथ शिक्षण संस्थान, मथुरा (उ.प्र.)

फोन– 0565–3240006, 9358340375

Website : anvaschool.org, Email-amarnath.mtr1@rediffmail.com

Date of Publication: 1st January 2016
Rs. 15.00 (Monthly) Registered: SSP/PY/47/2015-2017
RNI No.18135/70 WPP No.TN/PMG/(CCR)/WPP-472/15-17

vatika
creating lasting value

MatriKiran
SOHNA ROAD

ADMISSIONS OPEN:
Pre-Nursery to Grade 7 2014-15 Session

www.matrikiran.in • (0124) 400-5505

Your child has 5 facets
So should his education

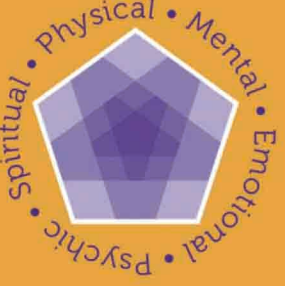

"The most precious gift you can give a child is The Love of Learning" – The Mother